CNAPTER - 10
ने ताजीका चश्मा

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? [*CBSE 2008 C; CBSE*]

उत्तर– चश्मेवाला कभी सेनानी नहीं रहा। वह तन से बहुत बूढ़ा और मरियल-सा था। परंतु उसके मन में देशभक्ति की भावना प्रबल थी। वह सुभाषचंद्र का सम्मान करता था। वह सुभाष की बिना चश्मे वाली मूर्ति को देखकर आहत था। इसलिए अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था। उसकी इसी भावना को देखकर ही लोगों ने उसे सुभाषचंद्र बोस का साथी या सेना का कैप्टन कहकर सम्मान दिया। चाहे उसका यह नाम व्यंग्य में रखा गया हो, फिर भी वह ठीक नाम था। वह कस्बे का अगुआ था।

प्रश्न 2. *हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा–*

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? [*CBSE 2012, 2010*]

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे? [*CBSE 2012*]

उत्तर–(क) हालदार साहब यह जानकर मायूस हो गए थे कि कैप्टन की मृत्यु हो चुकी है। अत: अब उस कस्बे में सुभाष की बिना चश्मे वाली मूर्ति को चश्मा पहनाने वाला कोई न रहा होगा। अब मूर्ति बिना चश्मे के ही खड़ी होगी।

(ख) मूर्ति पर लगा सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि यह धरती देशभक्ति से शून्य नहीं हुई है। एक कैप्टन नहीं रहा, तो अन्य लोग उस दायित्व को सँभालने के लिए तैयार हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सरकंडे का चश्मा किसी गरीब बच्चे ने बनाया है। अत: उम्मीद है कि ये बच्चे गरीबी के बावजूद भी देश को ऊपर उठाने का प्रयास करते रहेंगे।

(ग) हालदार साहब के लिए सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाना 'इतनी-सी' बात नहीं थी। यह उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। यह बात उनके मन में आशा जगाती थी कि कस्बे-कस्बे में देशभक्ति जीवित है। देश की नई पीढ़ी में देश-प्रेम जीवित है। इस खुशी और आशा से वे भावुक हो उठे।

प्रश्न 3. आशय स्पष्ट कीजिए–

"बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर– हालदार साहब ने चश्मेवाले कैप्टन की मृत्यु का समाचार सुना तो उदास हो गए। उन्हें लगा कि कैप्टन जैसे लोग ही तो देश के लिए आशा की किरण थे। शेष लोग तो देश के लिए मर-मिटने वालों पर हँसते हैं। नगरपालिका ने क्रांतिकारी सुभाष की मूर्ति बनवाई तो अधूरी बनवाई। उन्हें याद नहीं रहा कि जिस सुभाष की मूर्ति को वे चश्मा तक नहीं दे रहे हैं, उसने अपनी सारी जिंदगी देश के लिए लगा दी। उस छोटे-से कस्बे में यदि कैप्टन जैसा चश्मेवाला सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाता रहा तो लोग उस पर भी हँसते रहे। उसे पागल और सनकी कहते रहे। जहाँ ऐसे स्वार्थी लोग रहते हों, उस देश का भविष्य कैसे सँवरेगा? जिस जाति में लोग स्वयं का प्रचार-प्रसार करने में रुचि लेते हैं, उस देश का भी कोई भविष्य नहीं होता।

प्रश्न 4. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए। [*CBSE*]

उत्तर–पानवाला साक्षात् पान-भंडार था। उसकी दुकान पर ही नहीं, मुँह में भी पान ठुँसा था। पान के कारण वह बात तक नहीं कर सकता था। यदि उससे कोई कुछ पूछ ले तो पहले उसे पीछे मुड़कर थूकना पड़ता था। हाँ, स्वभाव से वह बहुत ही रसिया, हँसौड़ और मजाकिया था। वह शरीर से मोटा था। उसकी तोंद निकली रहती थी। अत: वह जब भी हँसता था तो उसकी तोंद थिरकने लगती थी। हँसने पर उसके पानवाले लाल-काले दाँत खिल उठते थे। वह बातें बनाने में उस्ताद था। उसकी बोली में हँसी और व्यंग्य का पुट बना रहता था।

प्रश्न 5. *"वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!"*

कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए। [*A.I. CBSE 2008 C*]

अथवा

कैप्टन के प्रति पानवाले की व्यंग्यात्मक टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए। [*CBSE 2010*]

उत्तर–पानवाले की यह टिप्पणी बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। उसे चाहिए था कि वह चश्मेवाले कैप्टन की भावनाओं का सम्मान करता। उसे पता था कि कैप्टन ही सुभाषचंद्र बोस की आँखों पर अपनी ओर से चश्मा लगाए रहता है। वह भी केवल इसलिए कि नेताजी की मूर्ति अधूरी न लगे। उसकी इस भावना से देशभक्ति प्रकट होती है। अत: ऐसे व्यक्ति की कमियाँ या कुरूपता नहीं देखनी चाहिए। न ही ऐसे व्यक्ति को पागल कहना चाहिए। अत: पानवाले की यह टिप्पणी गैरजिम्मेदाराना है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं–

(क) *हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।*

(ख) *पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला–साहब! कैप्टन मर गया।*

(ग) *कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।* [CBSE]

उत्तर– (क) यह वाक्य हालदार साहब की देशभक्ति को प्रकट करता है। उन्हें सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति से इसलिए प्रेम था क्योंकि वे देशभक्त थे। उन्हें सुभाष की मूर्ति में गहरी रुचि थी। मूर्ति में चश्मे का न होना, फिर बार-बार चश्मा लगाने वाले के बारे में जानना–इन बातों से पता चलता है कि वे देशभक्त थे।

(ख) पानवाला संवेदनशील व्यक्ति था। उसे चश्मेवाले कैप्टन के मरने पर बेहद अफसोस था। यद्यपि उसके जीते-जी उसने उसका मज़ाक उड़ाया। उसे लंगड़ा और पागल भी कहा। परंतु मरने के बाद उसे उसकी कीमत का पता चला। उसे लगा कि कस्बे में उस जैसा देश-प्रेमी और कोई नहीं है। अत: वह कैप्टन की याद करके उदास हो गया। उसकी आँखों में आँसू आ गए।

(ग) कैप्टन देशभक्त नागरिक था। उसे यह सहन नहीं था कि उसके नेताजी बिना चश्मे के रहें। इसलिए वह अपनी ओर से कोई-न-कोई चश्मा उनकी आँखों पर लगा देता था। इससे उसकी देशभक्ति का परिचय मिलता है।

प्रश्न 7. *जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा,* **अपनी कल्पना से लिखिए।** [CBSE]

उत्तर–जब तक हालदार साहब ने अपनी आँखों से चश्मेवाले कैप्टन को देखा नहीं था, तब तक उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और थी। उन्होंने सोचा था कि कैप्टन शरीर से हट्टा-कट्टा मजबूत होगा। वह जरूर सिर पर फौजी टोपी पहनता होगा। वह रौबदार, अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा। उसकी वाणी में भारीपन होगा।

प्रश्न 8. *कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है–*

(क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं? [CBSE]

(ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों?
[*केंद्रीय बोर्ड प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2008*]

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?
[*केंद्रीय बोर्ड प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2008*]

उत्तर–(क) इस तरह की मूर्ति लगाने का उद्देश्य यही हो सकता है कि लोग उस प्रसिद्ध व्यक्ति के बारे में जानें। उससे प्रेरणा प्राप्त करें। उसके गुणों को अपनाएँ। उसे याद रखें, ताकि समाज में अच्छे कार्य होते रहें।

(ख) हम अपने इलाके के चौराहे पर राष्ट्रीय महापुरुषों, प्रसिद्ध संतों, ऋषियों, साहित्यकारों और वैज्ञानिकों की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे।

क्यों–हम उनकी मूर्ति स्थापित करके उनके कामों को याद रखेंगे, उन्हें याद रखेंगे, उनसे प्रेरणा प्राप्त करेंगे और आने वाली पीढ़ियों को भी उनके बारे में बताना चाहेंगे।

(ग) ऐसी मूर्तियों के प्रति हमारा तथा समाज के सभी लोगों का यह दायित्व बनता है कि वे उनकी देखभाल और साज-सँवार करें। उन्हें समय-समय पर सँवारते रहें।

प्रश्न 9. *सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे–सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि।*

अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे और कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।

उत्तर–सामान्य जीवन में देश-प्रेम प्रकट करने के कई प्रकार हो सकते हैं। जैसे, पानी को व्यर्थ न बहने देना, बिजली की तबाही को रोकना। इधर-उधर गंदगी न फैलने देना। प्लास्टिक के प्रयोग को रोकना। देशवासियों को देश और समाज का अपमान करने से रोकना। फिल्मवालों और कलाकारों को अपने संतों, ऋषियों और महापुरुषों की मज़ाक करने से रोकना।

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए–

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

उत्तर–मानो कोई ग्राहक आ गया। उसे चौड़ा फ्रेम चाहिए। कैप्टन कहाँ से लाए? तो उसे मूर्तिवाला फ्रेम दे देता है। मूर्ति पर कोई अन्य फ्रेम लगा देता है।

प्रश्न 11. *'भई खूब! क्या आइडिया है!'* **इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?**

उत्तर–प्रत्येक भाषा दूसरी भाषा से कुछ शब्द उधार लेती है। कई बार दूसरी भाषा के शब्द ऐसे अर्थ और प्रभाव वाले होते हैं कि अपनी भाषा में नहीं होते। जैसे उपर्युक्त वाक्य में दो शब्द हैं–'खूब' तथा 'आइडिया'। 'खूब' उर्दू शब्द है। 'आइडिया' अंग्रेजी शब्द है। 'खूब' में गहरी प्रशंसा का भाव है। यह भाव हिंदी के 'सुंदर' या 'अद्भुत' में नहीं है। इसी प्रकार 'आइडिया' में जो भाव है, वह हिंदी के शब्द 'विचार', 'युक्ति' या 'सूझ' में नहीं है। इससे पता चलता है कि अन्य भाषाओं के शब्द हमारी भाषा को समृद्ध करते हैं। परंतु यदि उनका प्रयोग अनावश्यक हो, दिखावे-भर के लिए हो या जानबूझकर हो तो वे शब्द खलल डालते हैं।

प्रश्न 12. निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए–

(क) *नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।*

(ख) *किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।*

(ग) *यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।*

(घ) *हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।*

(ङ) *दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे।*

उत्तर–(क) **तो**–तुमने मुझे जो काम करने को दिया था, वह कर **तो** दिया।

भी–तुम्हारे साथ यह **भी** चलेगा।

(ख) **ही**–हमारे देश की रक्षा नौजवानों ने **ही** की।

(ग) **तो**–मेरे पास दस्ताने थे **तो** सही लेकिन मैंने पहने नहीं।

(घ) **भी**–उस मूर्ख को तुम **भी** नहीं समझा पाओगे।

(ङ) **तक**–उसने मेरे कमरे की ओर झाँका **तक** नहीं।

प्रश्न 13. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

(क) *वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।*

(ख) *पानवाला नया पान खा रहा था।*

(ग) *पानवाले ने साफ़ बता दिया था।*

(घ) *ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे।*

(ङ) *नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।*

(च) *हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।*

उत्तर–(क) उसके द्वारा अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिया जाता है।

(ख) पानवाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था।

(ग) पानवाले द्वारा साफ़ बता दिया गया था।

(घ) ड्राइवर द्वारा जोर से ब्रेक मारे गए।

(ङ) नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(च) हालदार साहब द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

प्रश्न 14. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए–

जैसे–अब चलते हैं। *–अब चला जाए।*

(क) *माँ बैठ नहीं सकती।*

(ख) *मैं देख नहीं सकती।*

(ग) *चलो, अब सोते हैं।*

(घ) *माँ रो भी नहीं सकती।*

उत्तर–(क) माँ से बैठा नहीं जाता।

(ख) मुझसे देखा नहीं जाता।

(ग) चलो, अब सोया जाए।

(घ) माँ से रोया नहीं जाता।

पाठेतर सक्रियता

- *लेखक का अनुमान है कि नेताजी की मूर्ति बनाने का काम मजबूरी में ही स्थानीय कलाकार को दिया गया–*

(क) मूर्ति बनाने का काम मिलने पर कलाकार के क्या भाव रहे होंगे?

(ख) हम अपने इलाके के शिल्पकार, संगीतकार, चित्रकार एवं दूसरे कलाकारों के काम को कैसे महत्त्व और प्रोत्साहन दे सकते हैं, लिखिए।

उत्तर–(क) मूर्ति बनाने का काम मिलने पर कलाकार के मन में बहुत उत्साह आया होगा। खुशी के मारे उसके पाँव धरती पर न पड़े होंगे। उसे लगा होगा कि अब पूरे कस्बे के लोग उसकी कला को देखेंगे, सराहेंगे। सबकी जुबान पर उसका ही नाम होगा। उसे खूब सराहना मिलेगी, यश मिलेगा।

(ख) हम अपने इलाके के शिल्पकार, संगीतकार, चित्रकार और अन्य कलाकारों को वाहवाही देकर प्रोत्साहन दे सकते हैं। यदि वह शिल्पकार है तो हम उसी से बनी चीजें खरीद सकते हैं। यदि वह संगीतकार है तो उसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में गाने का अवसर दे सकते हैं। उसका गाना सुनकर खूब तालियाँ बजा सकते हैं। उसे धन-मान देकर सम्मानित कर सकते हैं। उसके लिए पुरस्कार की योजना कर सकते हैं। यदि उसके लिए धन कमाने का कोई अवसर आता है तो वह दिला सकते हैं। इसी भाँति हम समय-समय पर चित्रकारों के चित्रों की प्रदर्शनी लगा सकते हैं। उनसे चित्र खरीद सकते हैं।

- *आपके विद्यालय में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण विद्यार्थी हैं।* उनके लिए विद्यालय परिसर और कक्षा-कक्ष में किस तरह के प्रावधान किए जाएँ, प्रशासन को इस संदर्भ में पत्र द्वारा सुझाव दीजिए।

सुरेश शर्मा
परीक्षा भवन
अ.ब.स. विद्यालय
नई दिल्ली।

विषय : चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों के लिए प्रबंध।

महोदय

मैं आपका ध्यान हमारे विद्यालय के चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों की ओर दिलाना चाहता हूँ। दुर्भाग्य से हमारे कुछ साथी टाँगों से और कुछ आँखों से लाचार हैं। यद्यपि वे छात्र अपनी इच्छाशक्ति के बल पर सारी मुसीबतों का सामना कर रहे हैं, परंतु विद्यालय का कर्तव्य है कि वह उनके लिए कुछ व्यवस्थाएँ करे। बरामदों पर चढ़ने के लिए जहाँ सीढ़ियाँ हैं, वहाँ बीच में कहीं-कहीं रैंप बनवाया जाए। जो कक्षाएँ ऊपर की मंजिलों पर लगती हैं, उन तक पहुँचने के लिए भी रैंप की व्यवस्था होनी चाहिए। अंधे छात्रों के लिए पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। उनके लिए ब्रेल लिपि की पुस्तकें मँगवाई जानी चाहिए। आशा है, आप इनकी ओर ध्यान देंगे।

धन्यवाद!

भवदीय
सुरेश शर्मा
कक्षा दशम 'क'
अनुक्रमांक 157
दिनांक : 13-3-2015

- कैप्टन फेरी लगाता था।

फेरीवाले हमारे दिन-प्रतिदिन की बहुत-सी जरूरतों को आसान बना देते हैं। **फेरीवालों के योगदान व समस्याओं पर एक संपादकीय लेख तैयार कीजिए।**

उत्तर–भारत में परंपरागत व्यापार का एक बहुत बड़ा हिस्सा फेरीवालों के हाथ में रहा है। ये फेरीवाले व्यापारी वर्ग के अंतर्गत आते हैं। परंतु इन्हें व्यापार में सबसे नीचा दर्जा प्राप्त है। यह बात सच है कि फेरीवाले गरीब होते हैं। इसी कारण वे एक जगह टिककर माल नहीं बेचते। घूम-घूम कर माल बेचना उनकी मजबूरी होती है, शौक नहीं।

हमारी सरकारें समय-समय पर व्यापारियों के कल्याण के लिए बहुत सुविधाएँ जुटाती हैं। परंतु फेरीवाले उपेक्षित रहते हैं। इनकी गिनती दिहाड़ी मजदूरों में भी नहीं होती। ये बेचारे रोज-रोज अपना माल गठरियों, रेहड़ियों, साइकिलों या अन्य वाहनों पर लादे-लादे घूमते हैं। सुविधाओं के अभाव में ही इन्हें अपने कंधों पर बोझ ढोना पड़ता है। सरकार चाहे तो फेरीवालों के लिए रियायती दर पर वाहनों की व्यवस्था कर सकती है। इन्हें बैंकों से आसान दर पर पैसा उधार मिल सकता है। इनके लिए सामान रखने के सेंटर खुल सकते हैं।

ये फेरीवाले गाँव-गाँव घूमकर उन बड़े-बूढ़ों और सुदूर रहने वालों को माल पहुँचाते हैं जो बाजार में जा नहीं पाते। ये चलते-फिरते बाजार हैं। गाँववासी हों या शहरवासी–इनकी बहुत-सी जरूरतें ये फेरीवाले पूरा करते हैं। इसलिए इनकी समस्याओं पर विचार होना चाहिए।

- **नेताजी सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक प्रोजेक्ट बनाइए।**

उत्तर–छात्र स्वयं तैयार करें।

- **अपने घर के आस-पास देखिए और पता लगाइए कि नगरपालिका ने क्या-क्या काम करवाए हैं? हमारी भूमिका उसमें क्या हो सकती है?**

उत्तर– नगरपालिका ने हमारे लिए जल, सीवर, बिजली, सफाई और पार्कों की व्यवस्था की है। हमारी गलियों में सदा 'स्ट्रीट लाइट' रहती है। नगरपालिका की जल-आपूर्ति होती है। सीवर की पाइप-लाइन भी नगरपालिका ने डलवाई है। एक जमादार सफाई करने के लिए भी रखा गया है। परंतु वह आता नहीं है। नगरपालिका ने एक पार्क भी बनवा रखा है। जिसे प्रायः हरा-भरा रखा जाता है।

हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इन व्यवस्थाओं को बनाए रखने में नगरपालिका का सहयोग करें। कोई व्यवस्था गड़बड़ा जाए तो इसकी उचित शिकायत उचित कार्यालय में करें। पार्क, गलियाँ साफ-स्वच्छ रखें। गलियों में लगे बल्ब, ट्यूटियाँ सुरक्षित रखें।